अध्याय - 2

डॉ० शिव प्रसाद सिंह

शिव प्रसाद सिंह प्रसिद्ध कथाकार रहीं। इहाँ के जन्म 19 अगस्त 1928 के बनरास के जलालपुर, जमनिया में भइल रहे।

इहाँ के प्रमुख किताब बाड़ी सन- गली आगे मुड़ती है, काशी-एक, नीला चाँद:काशी दो, वैश्वानर (सब उपन्यास), अंध कूप, एह यात्रा सतह के नीचे, (सब कहानी-संग्रह), मानसी गंगा किस किस को नमन करूँ क्या कहूँ, कुछ कहा न जाए (सब निबंध-संग्रह), कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा, आधुनिक परिवेश और नव लेखन, आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद (सब आलोचना) इहाँ के प्रगतिशील चेतना के रचनाकार रहीं। इहाँ के कुछ भोजपुरी रचना 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में प्रकाशित बाड़ीं सन। इहाँ के मउवत 28 सितंबर 1998 के हो गइल।

विषय-प्रवेश

अपराधी' कहानी में शोषणकारी व्यवस्था के निर्मम रूप उजागर भइल बा। एह कहानी से ई बात साफ हो जाता कि सच्चाई पर रहे वाला आदमी क़बो ना हारे, आ अताताई चाहे केतनो मजबूत होखे ओकर मन हरदम हारेला। कहानी के अंत बड़ा प्रतीकात्मक बा।

अपराधी

संझा के बेला। डूबत सूरज के गेरूई छांह गंगाजी के छाती पर लोटे लागति। संझौती हवा अपना झँकोर में फुहार लेके उड़े लागल। कगार पर हरियर चादर लेखा जौ के जेत जेमा बीच-बीच में सरिसो के पीयर बुट्टा जइसे गंगा मैया के अरार के केहू छींट ओढ़ा के ढाँप देलस। ए कोने से ओकोने तक फैलल खेत के बीच में पातर टेढ़-मेढ़ रहता जइसे कुँवार लइकी के मोलायम करिया बार के बीच दुध नियर चमकत माँग।

आगे के महुआ के फेड़ के कगरिया के लाल बाबू से उतरि के आ गइलन। ऊ जइसे केहू के खोजत होखन। एनी ओनी बड़ा तकलन। केहू ना लउकल त मन मारी के गंगा जी के धार देखे लगलन। एतने में बीच धार में से एक ठे छोट बुची डोंगी आवत देखाइल। करिया-सा डोंगी अपने मन से चुप-चाप बहल चलि आवति रहे जइसे कवनो मगर मन के मउज में बहल जाता होखे। एतने में ऊ डोंगी किनारे लगलि। ओपर एगो लइकी बइठ के मछरी मारति रहे। किनारे आके ऊ अपन कँटिया डोर सँभरलस, आ चले के भइल, त लाल बाबू तनी आगे बढ़लीं आ पूछ देलीं- 'का होत ह' ?

''मछरी ˙ ˙ ˙'' ऊ मलाह के लइकी बोललस, ''का एहू घाट पर चूंगी लागे लागल ?''

''नाहीं नाहीं।', लाल बाबू कहलन ''हमं त असहीं पूछ देलीं ह, कवनों बात रहे।'' एतना कह के ऊ ओकरा ओर चललन तले अरार प से केहू पुकरलस, 'मूंगा।' लाल बाबू देखलन कि उप्पर से एगो करिया अदमी उतरल। ओकरा देंह पर एगो लाल गउदी गमछा के अलावा कुछ रहे ना। बाकी ओकर देह ओही में अइसन लागत रहे जइसे सेमर के करिया डार में अंगार के फूल लागल होखे। गठल दँह, बाजू त अइसन कि ताल ठोक के छुवै त मछरी लेखा तरक जाय, मैगल हाथी नियर चलके ऊ मूँगा के पास आइल।

''मछरी मिलै ?''

''हँ'' मूँगा ओकरे ओर आँख घुमाय के देखलस आ मधुरे मुस्कराय के कहलस 'दूठे' लपचा, बस।'

मलाह ओकरा आँचर में बाँन्हल मछरी टोय के शरारत से बोलल, ''आ दूनो जीयते, अयँ?''

बेहया,' लाल बाबू मारे करोध के फट्ट से बोल देलन। ऊ दूनो घूम के देख लन स आ का जानी काहें बड़ा जोर से खिलखिलाय के हँस देलन स। ऊ मलाहवा मूँगा के हाथ धर लेलस आ कनखी ताक के लाल बाबू के ओर घूइर के देखत बाबू के अरार पर अपना गोड़न के निशान उतारत चल देलस। लाल बाबू देर ले ओह निसान के पाँत के देखत रहल न, फेर चुपचाप एक ओर चल देलन।

आज मलाह टोल में बाड़ा अनसनी फैलल बा। गाँव के छवरा के बीचो-बीच एक पुरान बर के फेड़ ह जवना में डोर नियर लटकल बरोह के गाँव के लड़का पकरि-पकरि घुमरि परउआ खेलेलन स, आ ऊ फेंड़ जानब जे बूढ़ दादा नियर अपन दाड़ी खींचेवाला लइकन के दुलरावेला। ए गाँव के अइसन के बा जे ए बार के नीचा छाँह में बइठल ना होखे आ छुटपन में ए बरोह में झूलल ना होखे। बाकी आज त एइजाँ लइका न के कहे चिरई क पूलो नइखे देखात, छाँह में जहाँ रोज-रोज मंगरू क ललका कुक्कुर बइठेला ऊँहे बँसखट पर थानेदार साहेब बइठल बानीं, पँरहीं फेंड़ के एक ठे मेट सोर में रसरी में बाँधल सुमेर मलाह बइठल ह जेकरा पखुरा, कान्ह आ जाँघ पर मारे बेत के निसान के लाल हो गइल ह। कत्तों-कत्तों त टटके लोहू चिपचिपात ह आ कत्तों लोहू जम के बइठ गइल बा जइसे खयर जम गइल होखे। थानेदार साहेब के पास में लाल बाबू बइठल बाड़न, उनके कहनाम बा कि उनके घरे से जवन चोरी भइल ह तवने में सुमेर मलाह के हाथ बा। थानेदार साहेब मार के थक गइलन आ उनकर हाथ मारे दरद के बेहाल बा, बाकी इ मलाह बा कि घाघ, एक बात ना बतवलस।

थानेदार के कहला से छोटन मियाँ बेंत उठवलन, आ अपन कुल हाथ देखा देलन बाकी सुमेर कुछ ना उगललस। बगल से दउर के ओकर मेहररू फेंकर के ओकरे ऊपर गिर गइल जइसे ऊ ओकरे देह पर छा जाये चाहत हो। ''मूँगा'' सूमेर बोलल, ''जा जा घर में जा'' आ फिर ऊ मूँगा के ओर आँख उठा के देखलस। जानीं का रहे ओकरे आँख में पीड़ा, तकलीफ निराशा कि मूँगा बिना कुछ बोलले आँख पोछत सामने के घर में चल गइल। लाल बाबू कनखी ताक के थानेदार के ओर इसारा कइलन। चार गो सिपाही आ थानेदार ओ घर में घूस के ओकरा कोना-कोना ढूँढ़

फेंकलन, लेकिन ना त लाल बाबू के कवनो सामान मिलल ना त मूँगा। लाचारे दावे थानेदार सुमेर के थाने ले गइलन, ओके बाद चोरी के जुरूम में छः महीना के जेहल हो गइल।

पाँच महीना बीत गइल। कुआर के महीना आ गइल। गंगा जी के पानी थिराय के दूध नियर निखर गइल। साँझ के बेला में नीला रंग के आसमान के छाँह के पानी साँवर लगत रहे जेकरे बीच में एक ठे छोट-सा डोंगी, बत्तख नियर हिलत डूलत किनारे ओर आवति रहे। ओकरा पीछे पानी पर एक ठे रेखा उभर गइल, उजर जइसन साफ आसमान में कचबचिया के पाँत होखे।

कगार पर से आज फेन लाल बाबू उतरलन। किनारे पहुँच के देख्लन कि ओ डोंगी पर उहे अवरत हाथ में कँठिया मछरी ले ले बइठल ह। ऊ ओकर पास गइलन, आ ओके चिढ़ाया के, ओकर दिल दुखा के हँसे खातिर आ ओके उदास देंचा के, दुखी देख के खुश होवे खातिर, पूछलन, ''ऊ अपराधी का भइल ?''

मूँगा उनके देखलस आ मुस्कुरा के बोलल, ''ऊ त इहाछ बा, हमारा गोद में दूध पियता'' आ अपन अँचरा उठा के देखवलस एक ठे छोटा बच्चा दुबक के पड़ल रहे।

हवा के झँकोरा उठल लहर करइलीं, किनारे पर धक्का मार के पानी खिलखिलाय के हँस उठल, आसमान में हवा कुरचि के सनसनाये लागल।

अभ्यास

(1) अपराधी कहानी के नायक के बा ?

(2) मूंगा के का काम रहे?

(3) शिव प्रसाद सिंह के परिचय दीं।

(4) एह तरह के कवनो दोसर कहानी पढ़ी।

(5) गाँव के बर, पीपर भा कवनो दोसर बड़हन गाछ के नीचे दिन भर होखेवाला गतिविधियन के नोट क के लिखी।

(6) नदी भा पोखरा में मछरी मारे के तरीका जानी।

(7) लाल बाबू मूंगा के काहे झूठा मोकदमा में फंसइले ?

शब्द-संपदा

छाँह – छाया

सँझौती – शाम के

अरार – किनारा

छवरा – रास्ता, राह

कुआर – एगो महीना

कँटिया – मिट्टी के पात्र

मैगल – मातल